TECHE UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4397**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

इंद्रियस
तक
१

तेहजिसूरसुभट तेहजिपंडित विद्वांसदिव्यधर्मनोजाणहार | तंनेहमिनइंप्रसंसु नित्यसदा | इं० इंद्रियरूपीयाचोरनेतें सदासर्वकाल | नलूंटि० जेहनो संचारित्र धन १

६०॥श्रीवीतरागायनमः॥सुचियसूरोसोचेवपंडिउ।तंपसंसिमोनिचं।इंदियचोरहिंसया।नलुंटियंजस्सचरणध

इं० इंद्रियरूपीया चंचलघोडा | दु० दुर्गतिनामारगनइविषइ | जाग० जाणितउ | भाविअभवस्वरूप संसारनउसरूप | रुं० रुंधइश्रीवीतरागनावचननइविषइ राषिइडोरीईकरी २ | इं० इंद्रियधूर्तनइं अहोक्षमः

णं॥१॥इंदियचवलतुरंगा।दुग्गइमग्गाणुधाविरेनिचं।भाविअभवसरूवो।रुंभइजिणवयणरस्सीहिं॥२॥इंदियधुत्ताण

त० तिलनाफोतरामात्रपणिपसरवा मदेसि | ज० जउपसरवादीधउ तउलीधउ | ज० जिहांक्षणएकवरसनीकोडिसरीषउ ३ | अ० जीतइंद्रियाचारि० जीतानथी | क० जिमकाठकीडेखाधउं

महो।तिलतुसमित्तंपिदेसुमापसरं।अहदिन्नोतोनीउ।जत्थखणोवरिसकोडिसमो॥३॥अजिइंदिएहिंचरणं।कठंवघुणे

अ० असारकरीइ | त० तउधर्मार्थीइ दृढ | ज० यत्नकरिवउं इंद्रीजीपवा मइविषइ ४ | ज० जिमकाकिणीकउडी नइहेति | को० कोडिरत्न हारइकोईएक पुरुष | त० तिमतुछ विषइलोलुपणउ

हिंकीरइअसारं।तधम्मत्थीहिंदढं।जइयव्वंइंदियजयंमि॥४॥जहकागिणीइहेउं।कोडिंरयणाणहारएकोई।तहतुछवि

जी० जीवहारइमोक्षनांसुख ५ | ति० तिलमात्रविषयनो सुख | दु० दुखमेरुपर्वतनाश्रृंगथकाउंचा ठं | भ० भवनी कोडिकरइ नहीनीठइ ईतलइ | जं० एहवुं जाणि

सयगिद्धा।जीवाहारंतिसिद्धिसुहं॥५॥तिलमित्तंविसयसुहं।दुहंचगिरिरायसिंगतुंगयरं।भवकोडीहिंनानिठइ।जंजाणसु

जेजाणइ ते धर्महितकरिउ ६ | भो० भोगवतांमीठा | तेहनापरिपाक विरस नीरस | किं० किंपाकवृक्षना फलसरीषा पविषयकामभोग | क० खसनुंखणवुं दुखनाउपजावणहार | दा० सुखनइविषइ बुद्धिदेखाडइ ७

तंकरिज्जासु॥६॥भुंजंतामहुरा।विवागविरसा।किंपागतुल्लाइमे।कच्छूकंडुयणंवदुक्खजणया।दाविंतिबुद्धिंसुहे॥७

१

१